

[मूल्यांकन के प्रकार]

Q. मुख्य रूप से मूल्यांकन दो प्रकार का होता है

- (1) परिणतात्मक मूल्यांकन (2) गुणात्मक मूल्यांकन

- (a) लिखित मूल्यांकन
(b) मौखिक मूल्यांकन
(c) प्रायोगिक " "

- (d) साक्षात्कार
(e) अवलोकन
(f) लाटन क्वेन
(g) माच क्वेन व स्तरमाप

संरचनात्मक मूल्यांकन - शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण के दौरान छात्रों से प्रश्न करता रहता है वे प्रश्न छात्रों के किसी पाठ को सिखने में सहायता करते हैं और शिक्षण के अन्तिम में सँवर्ण करते हैं। अतः शिक्षक जब कक्षा में शिक्षण कर रहे समय प्रश्नों द्वारा सिखने वाले छात्रों की व्यवस्थित या मूल्यांकन करता है तो इसे संरचनात्मक मूल्यांकन कहते हैं।

(c) **आकलित / योगात्मक मूल्यांकन** :- आकलित मूल्यांकन पाठ्यक्रम के सम्पत्ती के अंत में यह जात किया जाता है कि छात्रों के द्वारा निर्धारित अधिगम सम्बन्धी उद्देश्यों की प्राप्ति कैसी हुई। आकलित मूल्यांकन का प्रयोग छात्रों का अधिगम प्रतिक्रिया के स्वरूप में संरचनात्मक प्रमाणन या प्रेक्तीकरण के लिए किया जाता है। जिसे हम वार्षिक परीक्षा का नाम देते हैं।

(a) **साक्षात्कार** -> संरचित / मानकीकृत साक्षात्कार
-> असंरचित / अमानकीकृत साक्षात्कार

साक्षात्कार के सोपान - ① साक्षात्कार के पूर्व तैयारी ② साक्षात्कार का मुख्य पत्र ③ साक्षात्कार का अंतिम सोपान

(b) **अवलोकन / सर्वेक्षण / सर्वे पद्धति** -> अवलोकन पद्धति से अध्यापक या अर्थ किसी क्षेत्र विशेष का अध्ययन वहाँ के सर्वेक्षण की सहायता से करना है।

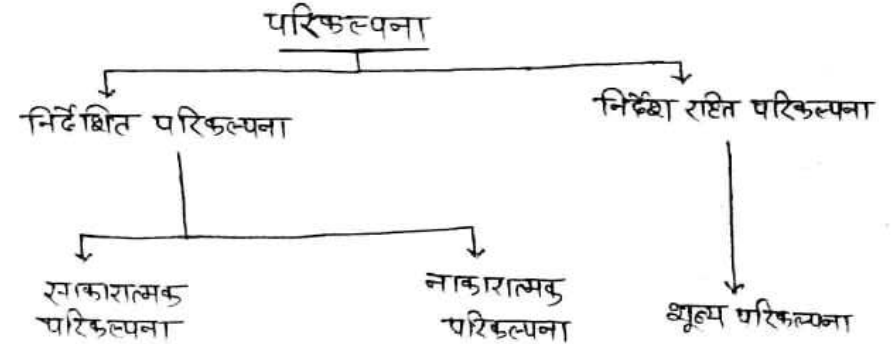
[उत्तम परीक्षण]

1. उत्तम परीक्षण की विशेषताएँ या प्रमुख कसौटियाँ - 6 प्रकार की हैं

- 1- व्यापकता
- 2- अनुनिष्ठता
- 3- वैधता
- 4- विश्वसनीयता
- 5- मितलपयिता
- 6- सर्वमान्य

[परिकल्पना] - " पूर्व चिन्तन / प्रस्तावित उत्तर "

"परिकल्पना समस्या का प्रस्तावित उत्तर होता है परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ - पूर्व चिन्तन। समस्या समाधान का पूर्व अनुमान ही परिकल्पना है। समस्या समाधान हेतु परिकल्पना अत्यन्त आवश्यक है परिकल्पना मान्य एवं अमान्य भी होता है।

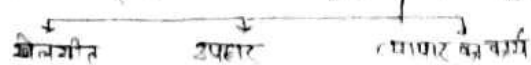


[अभिप्रेरण] - (5m)

- 1. "प्रेरणा सीखने के लिए राजमार्ग है।"
- 2. अभिप्रेरण के संस्करण - (1) अवस्थापना (2) अन्तर्गत (3) अन्तर्गत (4) अभिप्रेरण
- 3. अभिप्रेरण के प्रकार -
 - (a) जन्मजात अभिप्रेरण - भुख, प्यास, विश्राम, निद्रा।
 - (b) स्वभाविक अभिप्रेरण - खेलना, मुँह फाटी करना।
 - (c) कृत्रिम अभिप्रेरण - पुरस्कार, प्रशंसा, दण्ड।
 - (d) जैविक अभिप्रेरण - क्रोध, भय, प्रेम।
 - (e) मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरण - स्तनाभक्त, जिज्ञासा, पचापन।
 - (f) समाजिक अभिप्रेरण - प्रतिष्ठा, सुरक्षा, संरक्षण।
 - (g) प्राथमिक अभिप्रेरण - भुख, प्यास, यौन प्रियार, कष्ट।
 - (h) द्वितीयक अभिप्रेरण - प्रतिष्ठा, जिज्ञासा, स्वीकृति।

[1] किंडरगार्टन विधि (Kindergarten Method) - (1782-1852)

- 1. इस विधि के जन्मदाता जर्मन शिक्षाविद F.A. Froebel (फ्रोबेल) थे।
- 2. इसने Kinder (बालक) तथा Garden (उद्यान) शब्दों का संयोजन 'बालोद्यान' शिक्षण पद्धति भी कहा जाता है।
- 3. यह विधि आयु-6 सिद्धान्तों पर आधारित है
 - (1) एकता (Unity) (2) विकास (Development) (3) स्वयं क्रिया (Self-Activity)
 - (4) स्वतन्त्रता (Freedom) (5) समाजीकरण (Socialization) (6) खेल (Play)



[2] माण्टेसरी विधि (Montessori Method)

- 1. इस विधि की जन्मदाता इटली की डॉ. मरिया मांटेसरी [Dr. Maria Montessori] थी।
- 2. इसमें बच्चे और (विशेषकर 3 से 7 वर्ष आयु की) विशेष प्रकार की शिक्षा देने का मार्ग प्रशस्त किया।
- 3. इस प्रणाली का मुख्य सिद्धान्त निम्न है -
 - (i) स्वयं विकास का सिद्धान्त [Principle of Self-Development]
 - (ii) स्वतन्त्रता का सिद्धान्त [Principle of Freedom]
 - (iii) ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त [Principle of Sense-Training]
 - (iv) मांसपेशियों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त [Principle of Muscular Training]
 - (v) स्वयं शिक्षा का सिद्धान्त [Principle of Auto-education]

[3] डाल्टन प्लान विधि (Dalton's Plan Method)

- 1. इस विधि के निर्माण का श्रेय अमेरिकन शिक्षाशास्त्री, कुमारी हेलेन पार्क्स (Ks. Helen Parkhurst) को जाता है।
- 2. माण्टेसरी पद्धति के आधार मानकर उसे तालफो [9 वर्ष से अधिक] के लिए एक ऐसी विधि प्रदान की।
- 3. इसमें बच्चों को निश्चित समय तक कार्य (Definite Work in definite time period) निश्चित समय तक करना होता है।
- 4. इसे प्रयोगशाला योजना भी कहा जाता है।
- 5. यह विधि में निश्चित रूप से सभी स्तर के बालकों के लिए उपयोगी है साथ ही विशालता की ओर समरूपता जैसे -
 - 1-अग्रगण्यता (Tendency) 2-अपराध प्रवृत्ति [Delinquency] 3-पिछाव [Backwardness] 4-कामचोर [Shirkers] आदि से बुरा गिनता है।

4. प्रोजेक्ट विधि [Project Method]

- ↳ इस विधि के जन्मदाता अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्री (W. H. Kilpatrick) विल्हेल्म से माना जाता है।
- ↳ शिक्षा दार्शनिक जान ड्यूवी (John Dewey) ने अपनी प्रयोजनवादी (Pragmatic Philosophy) से दिया। जिसे विल्हेल्म ने अपनी विधि में बालक को उद्देश्यपूर्ण क्रिया से शिक्षा के रूप में परिभाषित किया है।
- ↳ प्रोजेक्ट पद्धति की कार्य प्रणाली —
 - (i) परिस्थिति उत्पन्न अथवा प्रदान करना [Providing an Creating Situation]
 - (ii) प्रोजेक्ट का चुनाव [Choosing of the Project]
 - (iii) प्रोजेक्ट की योजना बनाना [Planning of Project]
 - (iv) प्रोजेक्ट की क्रियान्विति [Execution of Project]
 - (v) प्रोजेक्ट का मूल्यांकन [Evaluation of the Project]
 - (vi) प्रोजेक्ट का लिखना [Recording of the Project]

(5) ह्यूरिस्टिक विधि (Heuristic Method)

- ↳ यह विधि प्रोफेसर आर्मस्ट्रॉंग [Prof. Armstrong] द्वारा दी गई है।
- ↳ जिसमें ह्यूरिस्टिक (Heuristic) का अर्थ "मैं खोजता हूँ" (I discover) के नाम का उपयोग किया जाता है। इसी आधार पर इसका नाम "ह्यूरिस्टिक" दिया गया।
- ↳ बालक प्रत्येक बात की खोज करता चलता है और उस खोज से प्राप्त परिणामों पर नये सिद्धान्त अथवा नियम को प्रस्तुत करता है।

↳ सिद्धान्त —

- (i) स्व शिक्षा या स्व-अनुभव का सिद्धान्त [Principle of Self-study or Self-Experience]
- (ii) क्रियाशीलता या करके सीखने का सिद्धान्त [Principle of Activity or Learning by Doing]
- (iii) प्रेरणा का सिद्धान्त [Principle of Motivation]
- (iv) रुचि का सिद्धान्त [Principle of Interest]
- (v) स्वतन्त्रता का सिद्धान्त [Principle of Freedom]

[6] विनेटिका प्लान [Winnetika Plan]

- ↳ इस विधि का निर्माण अमेरिका निवासी डॉ॰ कार्लटन वाशबर्न [Dr. Carleton Washburn] ने 1919 में किया।
- ↳ इस योजना का प्रारम्भ अमेरिका स्थित इलीनायस राज्य के विनेटिका नामक नगर में किया था इसलिए इसका नाम विनेटिका प्लान पड़ा।
- ↳ इस विधि में बालक के व्यक्तित्व को प्रधानता दी गई है।

सिद्धान्त — 2 मुख्य सिद्धान्त निम्न हैं।

- (i) बालक की क्षमताओं, योग्यताओं और व्यक्तिगत भेदों का सिद्धान्त [Principle of Child's Capacities, Abilities and Individual Differences]
- (ii) बालक के सामाजिक वातावरण का सिद्धान्त [Principle of Child's Social Environment]
 - (a) शिक्षण सामग्री का कार्य - इकाई के रूप में विभाजन।
 - (b) निदानात्मक जाच (Diagnostic Test)।
 - (c) स्व-अध्ययन व स्वतः रीखांचन की सामग्री का प्रयोग।

संवेग [EMOTION] ⇒ शब्द इमोवेयर [Emovere] से बना है।

- ↳ वुडवोर्ड (वुडवर्थ) - "संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था है।"
- ↳ मैक्डुगल - "संवेग प्रकृति का इक्षय है।"
- ↳ मैक्डुगल ने 14 संवेग बताए हैं जो निम्न हैं।

मूल प्रवृत्ति	संवेग	मूल प्रवृत्ति	संवेग
पलायन (Escape)	भय (Fear)	देव्य (Submission)	आत्मसमर्पण
मुमुर्सा (Combat)	क्रोध (Anger)	आत्म गोप्य	आत्म-अभिमान
निवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disgust)	सामुहिकता	रुकावट (Loneliness)
संतान की कामना	वात्सल्य (Tenderness)	अपेक्षा की तालमेल	भूख (Hunger)
क्षोभनागति	करुणा (Displeasure)	संविज्ञान (Acquisition)	आधिकार (Ownership)
काम-प्रवृत्ति (Sex)	कामुकता (Lust)	उत्पन्नाचरमिति	कृतिभाव
विजयता	आश्चर्य (Wonder)	हास (Laughter)	अमोद (Amusement)

संघेधण [COMMUNICATION]

- संघेधण = सम + धेधण अर्थात् समान रूप से भेजा गया
- Communication $\xrightarrow[\text{अर्थानुसार}]{\text{उत्पत्ति}}$ Communions (कम्यूनिस)
समान्य बनाना [To make common]
- अतः संघेधण का अर्थ परस्पर सूचनाओं तथा विचारों का आदान प्रदान करना है।

ई.जी. मेयर - "संघेधण से तात्पर्य एक व्यक्ति के विचारों तथा सम्मतिओं से दूसरे व्यक्तियों को परिचित कराने से है।"

संघेधण के सिद्धान्त [Principles of Communication]

- (1) सृजकता का सिद्धान्त (Principles of Activeness) :- संघेधणकर्ता (Communicator) तथा संघेधण ग्रहण करने वाला व्यक्ति (Receiver) संघेधण क्रिया के समय सृजक रहते हैं।



- (2) योग्यता का सिद्धान्त (Principles of ability) :- संघेधण क्रिया में यह आवश्यक है कि संघेधणकर्ता और संघेधण ग्रहण करने वाले दोनों योग्य होने चाहिए।
- (3) सहभागिता का सिद्धान्त (Principle of Sharing) :- इसमें संघेधणकर्ता एवं ग्रहण करने वाले दोनों के मध्य सहभागिता होनी चाहिए जिससे संघेधण क्रिया पूरी की जा सके।
- (4) उचित सामग्री का सिद्धान्त (Principle of Proper Content) :- संघेधणकर्ता को उचित सामग्री का चयन करना चाहिए।
- (5) संघेधण माध्यम का सिद्धान्त (Principle of Communication Media) :- संघेधण-कर्ता और ग्रहण के बीच संघेधण की कड़ी को जोड़ने के लिए एक माध्यम होता है। जैसे दो व्यक्ति (A & B) के बीच सारा प्रवाहित करने के लिए विद्युत तार होता है।
- (6) पृष्ठपोषण का सिद्धान्त (Principle of feedback) :- संघेधण क्रिया में संघेधणकर्ता को संघेधण के बारे में उचित पृष्ठपोषण (feedback) प्राप्त होता

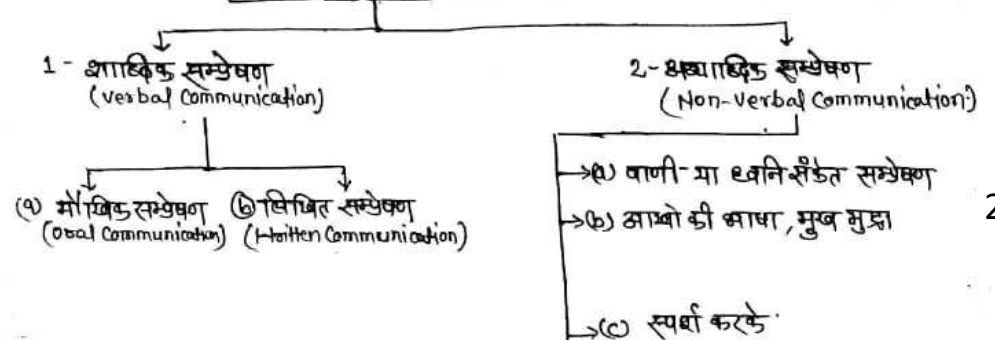
है तो। संघेधण अधिक प्रभावशाली होता है।

- (7) सहायक एवं बाधक तत्वों का सिद्धान्त (Principle of facilitators and barriers)
- संघेधण क्रिया में ऐसे तत्व और परिस्थितियाँ कार्य करती हैं जो सहायक या बाधक भूमिका निभाने से सहायक एवं बाधक होती हैं जैसे - शोरगुल प्रकाश की कमी, सुनने देखने में आने वाली कमी।

संघेधण के घटक [Components of Communication]

- (1) प्रेषककर्ता (Sender) (2) संघेधण प्राप्तकर्ता (Receiver) (3) पृष्ठपोषण (feedback)
(4) - संघेधण सामग्री (Communication Content)

संघेधण के प्रकार [Types of Communication]



- प्रभावी संघेधण के तरीके
- ① उद्देश्यपूर्ण
 - ② निर्देशनात्मक
 - ③ प्रेरणास्पद
 - ④ ताल केन्द्रित
 - ⑤ सुनियोजित
 - ⑥ प्रजातान्त्रिक पद्धति पर आधारित
 - ⑦ सक्रिय संघेधक
 - ⑧ प्रभावक विषयवस्तु
 - ⑨ संयोग की भावना का विकास
 - ⑩ पाठ की तैयारी
 - ⑪ पूर्वज्ञान से सम्बन्धित
 - ⑫ सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग
 - ⑬ स्वतन्त्र वातावरण
 - ⑭ आत्मविश्वास की जागरूकता
 - ⑮ संघेधक को पूर्णतः सचेत करना चाहिए।

- संघेधण की रुकावटें
- ① सूचि का अभाव
 - ② संघेधण सामग्री की कमी
 - ③ संघेधण माध्यम की कमियाँ
 - ④ भाषा की कमी
 - ⑤ प्राप्तकर्ता सम्बन्धी कमियाँ
 - ⑥ वातावरणजन्य कमियाँ

शिक्षण के सिद्धान्त [Principles of Teaching]

प्रश्न (1) शिक्षण का सूक्ष्म सिद्धान्त है। - आगमन विधि का सिद्धान्त

शिक्षण सिद्धान्त	विवरण (Description)
[1] प्रियेयधीयता या करके सीखने का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार अध्यापक के लिए छात्र का प्रियेयधारक होना अपने आवश्यक है। [आकर्षक एवं प्रियेयधारक होना]
[2] अभिप्रेरण का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक और छात्र दोनों ही अभिप्रेरित होकर कार्य करते हैं। फलस्वरूप आगमन प्रक्रिया प्रभावशाली होती है।
[3] स्वयं का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षण कार्य करते समय सर्वप्रथम छात्रों को स्वयं का ज्ञान लगाना चाहिए और उसके बाद शिक्षण करना चाहिए।
[4] निश्चित उद्देश्यों का सिद्धान्त	उद्देश्यों का निर्धारण करना शिक्षण का प्रमुख सिद्धान्तों में से एक है। उद्देश्य ही शिक्षण प्रक्रिया को दिशा प्रदान करते हैं।
[5] नियोजन का सिद्धान्त	एक अध्यापक प्रत्येक सामग्री का उचित-युक्त करने के लिए आवश्यक तरीके से समय-तत्वा का निर्माण करना चाहिए जैसे - पाठ्यपुस्तक, सहायक सामग्री का प्रयोग।
[6] चयन का सिद्धान्त	छात्रों के सामर्थ्य पर ध्यान देकर उद्देश्य शिक्षण, बुद्धिमत्ता, सम्भावना तथा साधन सुविधाओं को ध्यान में रखकर विषयवस्तु का चयन करना चाहिए।
[7] व्यापक विविधता का सिद्धान्त	छात्रों को व्यापक विविधता जैसे - वृद्धि, स्वभाव, क्षमता, रुचियाँ एवं योग्यता के आधार पर शिक्षण कार्य की व्यवस्था करना चाहिए जिससे की छात्रों को अच्छे परिणाम मिले।
[8] लोकतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त	लोकतन्त्रीय प्रणाली में शिक्षक गिर, दार्शनिक एवं मार्गदर्शक के रूप में व्यवहार करता है जिससे छात्रों को स्वचिन्तन, तर्क, मनन तथा निर्णय का अवसर मिलता है।
[9] जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त	जीवन विद्यालयों की दृष्टि से जीवनोपयोगी हो सके तो छात्रों को जीवन से जोड़ना जाना या समझ लिया है। उसे आसानी से विषयवस्तु को समझाया जाय तो वह सफल हो सकेगा।
[10] आवृत्ति का सिद्धान्त (Principle of Repetition)	यदि कोई विषय पाठ को कुछ समय पश्चात पुनः पढ़ लिया जाय तो पाठ अच्छी तरह से याद हो जाता है। अतः आवृत्ति का सिद्धान्त भी महत्वपूर्ण है।
[11] निर्माण एवं मनोरंजन का सिद्धान्त	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षण कार्य इस ही से करना चाहिए कि छात्र ज्ञान आनंद करते समय स्वाभाविकता प्रकट कर सकें। अतः शिक्षण कार्य - खेल, गीत, विचार, निर्माण।
[12] विभाजन का सिद्धान्त	इसके लिए पाठों को छोटी-छोटी इकाइयों में बाँट कर पढ़ाना चाहिए। सरलता एवं सुविधा की दृष्टि से विचार लेना चाहिए।

शिक्षण के आधुनिक आधारित विशिष्ट सिद्धान्त [Learning Based Specific Principle of Teaching]

विशिष्ट सिद्धान्त	विवरण (Description)
[1] आत्मीयता का सिद्धान्त (Principle of Rapport)	आत्मीयता से आरम्भ है - शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य आत्मगत या अपनेपन की भावना से भरे सम्बन्ध तब तक छात्रों की रुचि बचाए रखे। दूर हो तथा स्वयं को अपने शिक्षण कार्य आसानी से हो।
[2] स्वाभाविकता का सिद्धान्त (Principle of Natural Order)	इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि छात्रों को पढ़ाने वाले विषयवस्तु का सम्बन्ध पीछे की या आगे की विषयवस्तु से होना चाहिए। यदि नहीं है तो उसे इनका क्रम का ध्यान रखना चाहिए जैसे - गुणा। अगले पढ़ाने से पहले छात्रों को पढ़ाना पड़ाया जाए।
[3] अन्तः क्रिया का सिद्धान्त (Principle of Interaction)	शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य अन्तः क्रिया किसी भी दृष्टि से हो। छात्र पढ़े उसका अन्तः क्रिया स्मृति शक्ति तथा चिन्तन के आधार पर है। इसे माध्यम की शिक्षार्थियों द्वारा पढ़े गये पढ़ने अथवा उनकी रुचियों और समस्याओं के समाधान हो। शिक्षक उसका अन्तः क्रिया समाधान का प्रयास करे। यही अन्तः क्रिया है।
[4] विश्लेषण एवं संश्लेषण का सिद्धान्त (Principle of Analysis and Synthesis)	पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के न होने के कारणों तथा निष्कर्षों को खण्ड-खण्ड करके पता लगाना (Analysis) विश्लेषण कहलाता है। तो इन सभी कारणों को संगठित रूप में दूर करने का प्रयास करना संश्लेषण (Synthesis) है।